समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ३.५०

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

- प्रकाशन दिनांक : १५ मार्च २०१४
- वर्ष : १७
- अंक : ०९ (निरंतर अंक : २०१)

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

पूज्य बापूजी का अवतरण दिवस

२० अप्रैल अर्थात्

विश्व सेवा-सत्संग दिवस

भोलानंद ने किया षड्यंत्रकारियों व भ्रष्ट मीडियावालों को बेनकाब (पृष्ठ १४)

विश्वव्यापी हुआ 'मातृ-पितृ पूजन दिवस'

'मातृ-पितृ पूजन दिवस' को विश्वव्यापी बनाने का पूज्य बापूजी का ब्रह्मसंकल्प हुआ साकार।
भारत के अलावा विश्व के १६७ देशों में बही सच्चे प्रेम की गंगा।

अहमदाबाद

सूरत

कैलिफोर्निया

सिंगापुर

न्यूजर्सी

दुबई

शारजाह

शिकागो

भोपाल

कोरबा (छ.ग.)

टोहाना (पंजाब)

गोधरा (गुज.)

राजकोट (गुज.)

पुणे (महा.)

कोयम्बटूर (तमिलनाडु)

अनगुल (ओड़िशा)

लखनऊ

खड़गपुर (प. बंगाल)

हैदराबाद

जयपुर

बैंगलोर

जमशेदपुर (झारखंड)

देहरादून (उत्तराखंड)

हाँसी (हरियाणा)

(आवरण पृष्ठ ३ भी देखें)

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : १७ अंक : ०९
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २०१)
१५ मार्च २०१४ मूल्य : ₹ ३.५०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : राजेश बी. कारवानी
सम्पादक : सिद्धनाथ अग्रवाल
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद - ३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क :

भारत में :

(१) वार्षिक : ₹ ३० (२) द्विवार्षिक : ₹ ५०
(३) पंचवार्षिक : ₹ ११० (४) आजीवन : ₹ ३००

विदेशों में :

(१) पंचवार्षिक : US $ 50
(२) आजीवन : US $ 125

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय,
संत श्री आशारामजी आश्रम,
संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

e-mail : 1) lokkalyansetu@ashram.org 2) ashramindia@@ashram.org
Website : 1) www.lokkalyansetu.org 2) www.ashram.org

Opinions expressed in this news paper are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

'लोक कल्याण सेतु' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक और सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें।

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

* यह जन्मदिवस मेरा नहीं... ४
* हनुमानजी से सीखें व्यवहार-कुशलता ६
* संत-सम्मेलन, उल्हासनगर ८
* संत-सम्मेलन, लखनऊ १०
* संत-सम्मेलन, रायपुर १२
* जो बीत गया, वह लौट नहीं सकता – स्वामी अखंडानंदजी १३
* पुण्यदायी तिथियाँ १३
* मानव-जाति ही नहीं, सम्पूर्ण धरा के लिए वरदान : गौमाता १४
* मतदान जरूर करना चाहिए १५
* मति का कमाल, ईर्ष्यालुओं का बुरा हाल १६
* अब बोला आधुनिक विज्ञान, हर गर्भ में है प्रह्लाद जैसी संतान १७
* भोलानंद ने किया षड्यंत्रकारियों व भ्रष्ट मीडियावालों को बेनकाब १८
* बापूजी बताते हैं, क्या हम करते हैं ? २१
* उत्तम स्वास्थ्य के लिए महत्त्वपूर्ण बातें २३
* गजब है ईश्वरीय व्यवस्था ! २४
* बिना ऑपरेशन के ट्युमर गायब! २५
* प्रीति का पथ – स्वामी अखंडानंदजी २६

◆ टी.वी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ◆

A2Z NEWS — रोज सुबह ७-३० बजे, रात्रि १० बजे

care WORLD — रोज सुबह ७-०० बजे

मंगलमय — www.ashram.org पर उपलब्ध

◆ टीवी चैनलों पर संत-सम्मेलनों के अंश ◆

दिशा — रोज सुबह ८.२० बजे

श्रद्धा — रोज रात ९.५० बजे

(पूज्य बापूजी का अवतरण दिवस : २० अप्रैल)

'मैं चैतन्य हूँ, आत्मा हूँ, नित्य हूँ, मेरा जन्म नहीं है, मेरी मृत्यु नहीं है । जन्म-मृत्यु शरीर की है, मैं उसका साक्षी चैतन्य, आनंदस्वरूप हूँ...' तो तुम्हारा जन्मोत्सव मना के लाखों लोग अपना भाग्य बनायेंगे, तुमको अपना जन्मोत्सव मनाने की फिक्र नहीं करनी पड़ेगी । जन्म तो शरीर का होता है, मेरा जन्म है ही नहीं । शरीर के पहले भी मैं था, शरीर के बाद भी मैं रहूँगा । शरीर का जन्मदिवस तो पौने दो करोड़ लोगों का रोज होता है तो शरीर के जन्म का गर्व क्या ! और शरीर के जन्मदिवस की गिनती क्या !

जन्म मृत्यु मेरा धर्म नहीं है,
पाप पुण्य कछु कर्म नहीं है ।
मैं अज निर्लेपी रूप, कोई कोई जाने रे ॥

मैं अजन्मा, निर्लेप, नारायणस्वरूप हूँ । ॐ ॐ आनंद, ॐ ॐ माधुर्य, ॐ ॐ प्रभुजी, ॐ ॐ प्यारेजी, ॐ ॐ मेरे जी... बस, मौज हो जायेगी !

जन्म-कर्म को दिव्य कैसे बनायें ?

जीव ईश्वर कैसे बने ? जीव जब निःसंकल्प होता है तो ईश्वर बन जाता है । निर्वासनिक व निःसंकल्प हो जाय, झूठ-कपट, धोखेबाजी, संसार की वासना छोड़ दे तो ईश्वर हो जायेगा ।

साधारण जीव का जन्म होता है कर्मबंधन से, फल का भोग भोगने के लिए । लेकिन वह साधारण जीव, जो कर्मबंधन से आया है, फल भोगने के लिए आया है, वह जो भी प्रारब्ध में हो वह हँसते-खेलते भोग ले, 'मैं' की इच्छा न करे और ईश्वर को पाने का उद्देश्य बना दे तो उसके कर्म दिव्य हो जायेंगे । कर्म दिव्य होते ही जन्म भी दिव्य हो जायेगा अथवा तो जन्म दिव्य होते ही कर्म दिव्य हो जायेंगे ।

अपने-आपको खोजे कि 'मैं कौन हूँ ?' तो उत्तर मिलेगा - 'मैं फलाना हूँ'... 'यह तो शरीर है, इसको जाननेवाला मन है, मन के विचारों पर निर्णय करनेवाली बुद्धि है । ये सब तो बदलते हैं फिर भी जो नहीं बदलता है वह 'मैं' कौन हूँ ?' - ऐसा खोजते-खोजते गुरु के संकेत से सदाचारी जीवन जिये तो 'मैं कौन हूँ ?' इसको जान लेगा और जन्म दिव्य हो जायेगा । जन्म दिव्य होते ही कर्म दिव्य हो जायेंगे क्योंकि सुख पाने की लालसा नहीं है, दुःख से बचने

का भय नहीं है और 'जो है वह बना रहे' - ऐसी उसकी नासमझी नहीं है। नासमझी से 'यह बना रहे, वह बना रहे' कर-करके सभी मर गये, किसीका बना नहीं रहा। रावण ने ऐसा नहीं सोचा होगा कि 'मेरी सोने की लंका मिट जाय' और तुम्हारे, हमारे और सभीसे रावण ज्यादा बलवान था, ज्यादा बुद्धिमान था। लंका की और रावण की रखवाली करनेवाला इन्द्रजीत जैसा आज्ञाकारी बेटा... वह भी चला गया। सुलोचना जैसी सती बहूरानी भी बिलखती रही। जब इतना प्रभावशाली व्यक्ति भी मिला हुआ सदा नहीं रख सका तो अपन कब तक रखेंगे ?

जो कुछ मिला है, छूट जायेगा। शरीर भी मिला है, छूट जायेगा। मकान-दुकान सब छूट जायेगा। भगवान मिला हुआ नहीं है, भगवान तो अपना आपा है। जैसे शरीर मिला, ऐसे कोई भगवान मिलनेवाले नहीं हैं। भगवान तो पहले थे, अभी हैं, बाद में रहेंगे। जो कभी न बिछुड़े वे भगवान और जो सदा न रहे वह संसार और शरीर ! संसार और शरीर सदा नहीं रहते और आत्मा-परमात्मा कभी बिछुड़ते नहीं - यह ज्ञान पा लें तो जन्म-कर्म आसानी से दिव्य हो जायेंगे।

ज्ञानी का कैसा जन्मदिवस !

इस उत्सव में नाच-कूद के बाहर की आपाधापी मिटाकर सद्भाव जगा के फिर शांत हो जायें। संसारी लोग वैदिक ढंग से जन्मदिवस मनायें तो उन्हें बड़ा लाभ है लेकिन मैं अपना जन्मदिवस मनाऊँ तो मुझे कोई लाभ नहीं है और कोई लाभ होनेवाला भी नहीं है, भक्तों को लाभ होता है। इस बहाने सत्संग व सेवा मिल जाती है, तात्त्विक बात मिल जाती है।

भगवान का जन्मदिवस मनाओ तो भगवान खुद नहीं मनायेंगे, हम लोग मनाते हैं। जो आत्मारामी संत हैं उनको भी अपना जन्मदिवस मनाने में रुचि नहीं होगी क्योंकि वे आत्मवेत्ता तो जानते हैं, 'मेरा तो कोई जन्म ही नहीं है। जिसका जन्म है वह मैं हूँ ही नहीं। जन्मदिवस मेरा नहीं है, शरीर का है और मैं शरीर नहीं हूँ। शरीर के पहले भी मैं था, शरीर पैदा हुआ तब भी मैं था, शरीर बदला तब भी मैं हूँ और शरीर मर जायेगा फिर भी मैं रहूँगा। तो मेरा जन्म भी नहीं है, मृत्यु भी नहीं है।'

मेरे गुरुजी को भी रुचि नहीं होती थी। कोई उनका जन्मदिवस मनाये, आरती करे तो उसकी मौज !

और संसारी जो केक काट के जन्मदिवस मनाते हैं, उससे तो दीये जलाकर 'जन्मदिवस बधाई हो, पृथ्वी सुखदायी हो...' ऐसे मनानेवाले भक्तों को हजार गुना फायदा है लेकिन मेरे लिए आप बोलो कि 'पृथ्वी सुखदायी हो, जल सुखदायी हो, ग्रह सुखदायी हो, फलाना सुखदायी हो...' अरे ! **मुझे पता है कि मुझ चैतन्य से ही ये सब सुखदायी हैं।** उनसे हम क्या सुखी होंगे ? हाँ, इससे भक्तों को फायदा हो जाता है, गुरु के अनुभव को अपना अनुभव बनाने में।

चिंतन कणिका

* जो नित्य अंर्तमुख रहने का अभ्यास करता है उसका राग-द्वेष मिट जाता है।
* जो भृकुटि में ध्यान करते हैं वे विकारों पर जल्दी विजय पा सकते हैं और उनकी प्रार्थना जल्दी फलती हैं।
* पूर्ण संतुष्ट तो केवल वे ही हैं जिन्होंने अपने स्वरुप जान लिया है।
* तुच्छ स्वभावों पर विजय पाकर अपने आत्म-स्वभाव को जगाना यही शूरता है।
* श्रवण, मनन और निदिध्यासन हवाई जहाज की यात्रा के समान हैं, जो परमात्माप्राप्ति के लक्ष्य तक जल्दी पहुँचा देते हैं।
* अपने दृढ़ संकल्प की पूर्ति के लिए बार-बार असफल होकर भी पीछे न मुड़ो। अंत में निःसंदेह तुम्हारी विजय होगी।

- पूज्य बापूजी

हनुमानजी से सीखें व्यवहार-कुशलता

- स्वामी अखंडानंदजी सरस्वती

(श्री हनुमान जयंती : १४ अप्रैल)

श्री हनुमानजी की अपने इष्ट श्रीरामजी के चरणों में अनन्य प्रीति थी। मानव-जीवन के परम लक्ष्य परमात्मप्राप्ति के लिए सेवक का अपने स्वामी, शिष्य का अपने गुरुदेव के चरणों में कैसा समर्पण होना चाहिए इसकी सुंदर प्रेरणा तो हमें उनके जीवन से मिलती ही है, साथ ही व्यवहार-कुशलता की रीत भी हमें हनुमानजी से सीखने को मिलती है।

'श्री रामचरितमानस' के सुंदरकांड में आता है कि सीताजी की खोज करते हुए हनुमानजी जब अशोक वाटिका पहुँचे तो जिस वृक्ष के नीचे सीताजी बैठी थीं उसी पर जा बैठते हैं और धीरे से रामचन्द्रजी द्वारा दी गयी अँगूठी नीचे गिरा देते हैं। सीताजी उस रामनाम-अंकित मुद्रिका को देखकर हर्षित तो होती हैं पर उनके मन में कई संकल्प-विकल्प भी होते हैं। यह देख हनुमानजी पेड़ पर बैठे-बैठे ही श्रीरामजी के गुणों का सुंदर वर्णन करने लगते हैं, जिसको सुनकर सीताजी का सारा दुःख भाग जाता है और सीताजी कह उठती हैं कि ''जिन्होंने इतनी सुंदर कथा सुनायी वे प्रकट क्यों नहीं होते ?'' लेकिन जब हनुमानजी सीताजी के सामने आते हैं तो सीताजी मुँह मोड़ लेती हैं। वे सोचती हैं कि 'कहीं रावण ही रूप बदलकर तो नहीं आ गया !' तब हनुमानजी सीताजी की शंकाओं का समाधान करते हुए कहते हैं कि **राम दूत मैं मातु जानकी ।** पहला सम्बोधन किया 'मातु जानकी', आप मेरी माँ हो और मैं रामचन्द्रजी का दूत हूँ। **सत्य सपथ करुनानिधान की ।** अपने प्रिय व्यक्ति की सौगंध खायी जाती है, तो बोले कि 'सत्य शपथ है।' किसकी ? 'करुणानिधान की।'

'माता ! मैं यह मुद्रिका लेकर आया हूँ और श्रीरामचन्द्रजी ने यह आपके लिए दी है, जिससे आप हमको ठीक-ठीक पहचान सको ।' अब सीताजी को पूर्ण विश्वास होता है कि ये रामजी के दूत हैं।

यह हनुमानजी की व्यवहार-कुशलता है कि वे सीधे सीताजी के सामने जाकर खड़े नहीं हुए बल्कि धीरे-धीरे उनका विश्वास सम्पादन किया।

तब जानकीजी हनुमानजी से पूछती हैं कि ''लक्ष्मणसहित श्रीरामचन्द्रजी सुख से तो हैं न ?'' यहाँ ऐसा प्रसंग है कि यदि वे यह बात कह दें कि 'रामचन्द्रजी बहुत कुशल हैं, उनको कोई तकलीफ नहीं है।' तो जानकीजी को बड़ा दुःख हो जायेगा, सोचेंगी : 'मैं तो यहाँ उनके लिए इतनी दुःखी हो रही हूँ और वे वहाँ बड़ी मौज में हैं।' और यदि वे यह बात कह दें कि 'रामचन्द्रजी तो बड़े ही दुःखी हैं।' तब तो जानकीजी का हृदय फट जाय। न दुःखी कहा जा सकता है, न सुखी कहा जा सकता है। सुखी कहें तो प्रेम की कमी है और दुःखी कहें तो जानकीजी को बड़ी पीड़ा पहुँचे। तो सँभालकर बोलते हैं :

मातु कुसल प्रभु अनुज समेता।
तव दुख दुखी सुकृपा निकेता॥

'हे माँ ! प्रभु अपने भाई सहित सकुशल हैं। वे केवल आपके दुःख से दुःखी हैं, और उनको कोई दुःख नहीं है।'

देखो, दोनों बातें सँभल गयीं। इससे हनुमानजी की बुद्धिमत्ता प्रकट होती है।

किसीका संदेश दूसरे तक किस प्रकार पहुँचाया जाता है, इस कला में हनुमानजी की निपुणता इस प्रसंग से स्पष्ट होती है।

भगवान श्रीरामजी ने हनुमानजी से कहा था कि **कहि बल बिरह बेगि तुम्ह आएहु।** 'हमारा बल भी बताना जिससे आश्वासन मिले और हमारा विरह और प्रेम भी बताना जिससे अविश्वास न हो।' इस पर हनुमानजी सोचते हैं कि 'बिना रामचन्द्रजी के शब्दों में कहे संदेश को ठीक-ठीक नहीं पहुँचाया जा सकता और रामचन्द्रजी जैसा कहते हैं, वैसा दूसरा कोई अपनी ओर से कह नहीं सकता।' इसलिए वे रामजी के शब्दों में ही कहते हैं : **मो कहुँ सकल भए बिपरीता।** 'हे सीता ! तुम्हारे वियोग में सब कुछ विपरीत हो गया है।' **कहेहू तें कछु दुख घटि होई।** 'कहने से भी दुःख कुछ कम होता है परंतु कहूँ किससे ? यह हृदय की बात, यह प्रेम की पीड़ा जिस किसीसे कहने की तो नहीं होती, सो किससे कहूँ ? यह बात कोई समझ नहीं सकता।'

प्रभु का यह संदेश सुनकर जानकीजी प्रेम में अति मग्न तो हो गयीं लेकिन विरह की पीड़ा से बहुत दुःखी भी हो गयीं।

विरह का यह दुःख कैसे दूर हो, इसके लिए हनुमानजी कहते हैं कि ''माता ! आप अपने हृदय में धीरज धारण करिये और श्रीरामचन्द्रजी का सुमिरन करिये। जो उनकी सेवा (सुमिरन, भक्ति) करता है, वे उसको सुख देनेवाले हैं। इसलिए अब आप अपने हृदय में श्री रघुपतिजी के प्रभाव को ले आइये और मेरा वचन सुनिये।

यह राक्षसों का समूह भुनगों (पतंगों) का समूह है और रघुपति के बाण धधकती हुई आग हैं। आग के पहुँचने की देर है, भुनगे स्वयं ही आग में आ पड़ेंगे। अतः धैर्य धारण कीजिये।''

श्री हनुमानजी के वचन सुनकर सीताजी का सारा दुःख दूर हो जाता है और वे प्रसन्न हो के हनुमानजी को कई वरदान भी देती हैं। श्री हनुमानजी के जीवन का यह सुंदर प्रसंग हमें लौकिक व्यवहार में सफल होने की सुंदर प्रेरणा देता है।

संत-सम्मेलन, उल्हासनगर

१४ फरवरी को उल्हासनगर, ठाणे (महा.) में सामूहिक 'मातृ-पितृ पूजन' कार्यक्रम के साथ संत-सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

इस कलियुग में जहाँ संतानें माता-पिता की बात नहीं मानतीं, कई तो उनको वृद्धाश्रमों में भेज देते हैं, ऐसे समय में अपनी संतानों के द्वारा बड़े आदर-सम्मान के साथ पूजन किये जाने पर माता-पिता के हृदय छलक उठे और आँखों से प्रेमाश्रुओं की धाराएँ बह चलीं। बड़ा ही भावपूर्ण दृश्य था। सबके हृदय से मानो पूज्य बापूजी के लिए धन्यवाद और अहोभाव निकल रहा था क्योंकि बापूजी ने माता-पिता का पूजन करने की प्रेरणा देकर परिवार में, समाज में नंदनवन जैसा माहौल पैदा करने का अभियान शुरू कर दिया है। इस सम्मेलन में पधारे संतों के उद्‌गार :

बापूजी पूरे विश्व को चरित्रवान बना रहे हैं

– स्वामी चक्रपाणिजी अध्यक्ष, संत महासभा

जब पूज्य बापूजी ने वेलेंटाइन डे का एक वायरस हमारे देश में प्रवेश होते देखा तो उन्होंने उसका विकल्प 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' सबके सामने रख दिया। कितना बढ़िया ! बिना विरोध के... माता-पिता के पूजन का दिवस ! लोग कहते हैं कि युवा पथभ्रष्ट हो रहा है लेकिन मैं देख रहा हूँ कि जितने युवक-युवतियाँ बापूजी से जुड़े हुए हैं वे तो दूसरों को भी पथ दिखा रहे हैं। आशारामजी बापू ने जो दिशा दी है वह सिर्फ एक क्षेत्र, एक समाज अथवा एक जाति-विशेष के लिए नहीं दी है बल्कि वह पूरे विश्व को चरित्रवान बनाने के लिए एक कदम है।

माता-पिता की पूजा, धर्म की रक्षा

– श्री अखिलेश तिवारीजी
अध्यक्ष, ब्राह्मण एकता सेवा संस्था

वेलेंटाइन डे के नाम से पाश्चात्य सभ्यता की एक धारा भारत के सनातन धर्म को विगत कई वर्षों से कमजोर कर रही थी। परम आदरणीय संत श्री आशारामजी बापू ने इस विषय को अपनी दूरदृष्टिता से पहले ही समझ लिया था कि 'वेलेंटाइन डे के कारण भारत के युवक-युवतियों का संसार नष्ट होगा।' इसलिए ८ वर्षों से पूज्य बापूजी की प्रेरणा से मातृ-पितृ पूजन दिवस देश-विदेश में मनाया जा रहा है।

चरित्र बदलने का सामर्थ्य केवल बापूजी में है

– संत श्री अरविंदजी महाराज ,शिरडी (महा.)

पूज्य बापूजी ने एक अभियान चला दिया कि १४ फरवरी का दिन वेलेंटाइन डे नहीं प्रेम का दिवस रहेगा और प्रेम भी वह जो माता-पिता को प्रेम दे सके। ५० साल हो गये बापूजी को, क्या किया अपने लिए ? आज करोड़ों लोग उनका सत्संग सुनते हैं। जब षड्यंत्रकारियों ने देखा कि 'अरे, ये तो पूरे विश्व को अपना बना लेंगे ! क्या किया जाय ?' तो यह षड्यंत्र किया।

आदमी के चरित्र को बदलने का सामर्थ्य तो सिर्फ बापूजी में है। कानून और दंड के भय से समाज को नहीं सुधारा जा सकता, समाज-सुधार का कार्य तो परम पूज्य बापू आशारामजी ने करके दिखाया है। जेल में रहते हुए भी बापूजी ने अपने आश्रमों में आदेश दिया कि 'माता-पिता के सम्मान व प्रेम की ये लौ बुझनी नहीं चाहिए, जलती रहनी चाहिए।' नेता समाज में आता है तो नोट, वोट और सपोर्ट माँगने के लिए आता है लेकिन आशारामजी बापू आते हैं तो लोगों से उनकी खोट माँगने के लिए आते हैं कि 'तुम्हारे अंदर जो बुराई है, जो दुर्गुण हैं, उनको निकाल दो।' वे गुरु नहीं हैं, सद्गुरु हैं !

यह 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' नहीं, यह तो 'बापू दिवस' के रूप में मनाना चाहिए क्योंकि बापूजी के मन में यह बात उस परम पिता परमात्मा ने डाली है।

बापूजी ने बहुत अच्छे संस्कार दिये हैं

– साँईं लीलारामजी, भाऊ परसरामजी झूलेलाल मंदिर के गादीसर

बहुत खुशी की बात है कि हमारे बापूजी ने हम लोगों को यह रास्ता दिखाया है। बापूजी ने सबको अच्छी शिक्षा दी कि 'आप प्रेम करो पर अपने माता-पिता से। उनकी सेवा करो, उनकी इज्जत करो, उनका मान-सम्मान करो।' मैं बापूजी को प्रणाम करता हूँ और लालसाँईं से प्रार्थना करता हूँ कि बापूजी जल्दी बाहर आ जायें।

संत-सम्मेलन, लखनऊ

मैं भी चाहूँगी ऐसा मार्गदर्शन

– उल्का गुप्ता, 'झाँसी की रानी' धारावाहिक की रानी लक्ष्मीबाई

यह जानकर मैं काफी खुश हूँ कि बापूजी ने १४ फरवरी को 'माता-पिता पूजन दिवस' रखा। इस दिन हम लड़के-लड़की के बीच प्रेम-दिवस मनाने के बदले क्यों न माता-पिता के साथ प्रेम-दिवस मनायें। इस रिश्ते को और आगे बढ़ायें, इसकी अहमियत समझें।

अब मैं सही मायने में जान पा रही हूँ कि गुरु-शिष्य का रिश्ता कैसा होता है और मैं काफी खुश हूँ कि आप (साधक) अपने बापूजी पर इतना विश्वास रखते हैं, उनसे इतना प्रेम करते हैं ! तो जरूर ही आप सभीको एक बहुत अच्छा मार्गदर्शन मिला होगा। मैं भी चाहूँगी ऐसा मार्गदर्शन भगवानस्वरूप बापूजी से। मैं दिल से ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि 'बापूजी इन सारी कानूनी प्रक्रियाओं से उबरकर आप सभीके समीप आयें और आप वापस उनका दर्शन-सत्संग पायें।'

कब तक नजरअंदाज करोगे इस सच को ?

- फिरोज खान
'महाभारत' धारावाहिक के अर्जुन

एक संत, जो समाज को इतनी ऊँचाई पर ले गये, उन्हें एक मनगढ़ंत कहानी रचकर फँसाया गया है। इसका विरोध करने के लिए हम सब खड़े हैं। मैं षड्यंत्रकारियों से पूछता हूँ कि तुम्हारे पास कौन-सा प्रमाण है ? तो उनके पास कोई सही प्रमाण नहीं है। मगर मेरे पास बापूजी की निर्दोषता और महानता के प्रमाण हैं।

हमारे पूज्य बापूजी एक दिन गोंडा जिले (उ.प्र.) से गुजर रहे थे। वहाँ एक बस्ती नेस्तनाबूद हो गयी थी। किसी रईस ने या सरकार ने नहीं देखा लेकिन हमारे बापूजी ने देखा और कहा कि 'इस गोंडा की बस्ती को मैं पनपाऊँगा, मैं यहाँ घर बनवाऊँगा, मैं यहाँ कपड़े-लाइट दूँगा।' इसका जवाब है तुम्हारे पास ? जवाब नहीं है क्योंकि तुमने सच्चाई से आँखें मोड़ रखी हैं। तुम इसको कबूल नहीं करोगे क्योंकि इसको कबूल करते ही तुम झूठे साबित हो जाओगे। मगर झूठ की ज्यादा उड़ान नहीं होती।

गौमाता के बारे में बहुत लोग बातें करते हैं लेकिन गौमाता के लिए करता कौन है ? कसाईखाने में कटने के लिए ट्रक-के-ट्रक भर के ५००० गायें जा रही थीं। वहाँ हमारे संत बापूजी ने उनको रोककर कहा कि 'इन गायों को मैं सँभालता हूँ। इनको चारा मैं दूँगा, इनको संरक्षण मैं दूँगा।' गाय के झरण व गोबर से निर्मित उत्पादनों से गौशाला को स्वावलम्बी बनाया गया, साथ ही कई परिवारों के लिए रोजी-रोटी का द्वार खुल गया।

बापू एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जिनके हृदय में गरीबों के लिए दर्द है। बापूजी की प्रेरणा से बहुत सारे गरीबों को आश्रमनिर्मित राशनकार्ड दिये गये हैं और आश्रम द्वारा उन्हें नियमित रूप से राशन, कपड़े दिये जा रहे हैं। इसके अलावा उन्हें दक्षिणा भी दी जा रही है ताकि वे दो वक्त की रोटी खा सकें और अपने बच्चों को अच्छे-से रख सकें। कब तक नजरअंदाज करोगे इस सच को ?

१४ फरवरी को वेलेंटाइन डे मनाया जा रहा था। बापूजी ने कहा : 'यह गलत है। इस दिन मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाया जाय।' क्योंकि प्यार एक भावना है, एक लगाव है और यह लगाव एक माँ और बेटे का होता है, एक गुरु और शिष्य का होता है, एक संत और उनके चाहनेवालों का होता है, उसीको 'प्यार' कहते हैं। मैं दावे से कहता हूँ, मेरे पास सबूत है कि मात्र बापू ही एक ऐसे संत हैं जिन्होंने सारे मजहब, सभी धर्मों को एक ही बात पर संगठित करके दिखाया है।

संत-सम्मेलन, रायपुर

जब-जब संस्कृति पर आँच आती है तब-तब बापूजी जैसे संतों का प्राकट्य होता है

- साध्वी सरस्वतीजी ,भागवत कथाकार

साँच को कभी आँच नहीं। संतों को निशाना बनाया जा रहा है क्योंकि विधर्मियों की रोजी-रोटी बंद हो रही है। बिहार, झारखंड आदि क्षेत्रों में ५००-६०० ऐसे गाँव थे जो गाँव-के-गाँव धर्मांतरित हो गये थे। हमारे बापूजी एक ऐसे संत हैं जिन्होंने उन्हें घर-वापसी करायी। उन लोगों को मकान दिये, जरूरत की चीजें दीं, पैसे दिये, सब कुछ दिया। लोगों ने कहा कि 'बापूजी जैसे संत इस दुनिया में कोई नहीं हैं।' लोग उनके नाम की माला ले के जपने लगे।

बापूजी का जीवन बहुत ही पवित्र रहा है। उन्होंने देश के लिए बहुत ही अच्छे-अच्छे कार्य किये हैं। गौमाता की सेवा, गौ-रक्षा - ऐसे कई सुंदर संकल्प बापूजी ने लिये हैं और हम सभी अपनी आँखों से वह देख रहे हैं।

जब-जब देश की संस्कृति पर आँच आती है, जब-जब कोई रावण, कोई आततायी, कोई राक्षस अग्नि लेकर इस संस्कृति को जलाने के लिए आता है, तब-तब भारत देश की इस भूमि पर स्वामी विवेकानंद, श्री रामकृष्ण परमहंस और संत आशारामजी बापू जैसे संतों का प्राकट्य होता है।

बालयोगेश्वर श्री रामबालकदासजी महात्यागी, अधिपति, पाटेश्वर धाम : समाज की सुरक्षा सदा से संतों ने की है। संत ही बचाते हैं संसार को। हम सब एक हैं। हम एक बन के मुकाबला करेंगे षड्यंत्र का।

जो बीत गया वह लौट नहीं सकता

– स्वामी अखंडानंदजी सरस्वती

स्वप्नमाये यथा दृष्टे – स्वप्न क्या होता है, माया क्या होती है ? असद् वस्त्वात्मिके असत्यौ – यह स्वप्न है। जो मर गया फिर जिंदा नहीं हो सकता। जो बीत गया वह फिर लौट नहीं सकता। गया रविवार अब नहीं आ सकता। गया गुरुवार अब नहीं आ सकता। उसका नाम रखा गया गुरुवार ही लेकिन काल की धारा में वह गुरुवार बह गया, रविवार बह गया। मन की धारा में जो वस्तुएँ आयीं, वे बह गयीं। जैसे सिनेमा के पर्दे पर जो रोशनी आती है, मिनटभर मालूम पड़ता है कि वही तस्वीर है लेकिन वह तस्वीर तो बहती जाती है। इसी प्रकार यह सृष्टि बहती जाती है। गयी बात फिर लौट नहीं सकती। यह माया है, जादू का खेल है। अविवेकी लोगों को ही यह सच्ची मालूम पड़ती है। जैसे कोई मायावी पुरुष एक बाजार फैला दे, उसमें दुकान, घर, औरत, मर्द हों, चारों ओर व्यवहार फैला हुआ हो, गंधर्वनगर दिखायी पड़ रहा है। क्या मजा ! पर है सब

पुण्यदायी तिथियाँ

६ अप्रैल : रविवारी सप्तमी (सूर्योदय से रात्रि १२–५५ तक)

८ अप्रैल : श्रीराम नवमी

११ अप्रैल : कामदा एकादशी (ब्रह्महत्या आदि पापों तथा पिशाचत्व आदि दोषों का नाश करनेवाली तिथि)

१४ अप्रैल : व्रत पूर्णिमा, श्री हनुमान जयंती (उपवास), चैत्र संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से दोपहर ११–४० तक)

१५ अप्रैल : चैत्री पूर्णिमा, वैशाख स्नानारम्भ (वैशाख मास में प्रातःस्नान करने से अनेक जन्मों की उपार्जित पापराशि नष्ट हो जाती है। वैशाख–स्नान तथा भगवान के पूजन से अत्यंत दुर्लभ वस्तु भी प्राप्त हो जाती है।)

२० अप्रैल : पूज्य संत श्री आशारामजी बापू का अवतरण दिवस

२५ अप्रैल : वरूथिनी एकादशी (दस हजार वर्षों की तपस्या का फल देनेवाला व्रत)

२८ अप्रैल : सोमवती अमावस्या(दोपहर १२–४१ से २९ अप्रैल सूर्योदय तक)

२ मई : अक्षय तृतीया (वर्ष के साढ़े तीन शुभ मुहूर्तों में से एक), त्रेता युगादि तिथि (प्रातः पुण्यस्नान, अन्न–जल दान, जप, तप, हवन आदि शुभ कर्मों का अक्षय फल होता है।)

मानव-जाति ही नहीं, सम्पूर्ण धरा के लिए वरदान : गौमाता

गाय और बैल सदियों से हमारे सांस्कृतिक देश भारत की प्रगति की रूपरेखा बनाते आये हैं। गाय हमारे देश में माता होकर पूजी जाती है परंतु आज हमारे देश के इस गौरव की ऐसी दयनीय अवस्था हो गयी है कि बहुउपयोगी होने के बाद भी आज इसी देश में गायों की संख्या दिन-ब-दिन घटती चली जा रही है। इसका महत्त्वपूर्ण कारण है कि हमने गाय को अपने दैनिक जीवन से बाहर कर दिया है। इससे गौ-हत्यारे स्वार्थ के लिए अंधाधुंध गौ-हत्याएँ कर रहे हैं। यदि हम अपनी संस्कृति के अनुपम तत्त्व को नष्ट होने से बचाना चाहते हैं तो इसके उपाय भी बहुत सरल एवं लाभदायी हैं।

गाय-बैल की हत्या के कारण

(१) रासायनिक खाद का उपयोग ज्यादा करने से गोबर खाद की बिक्री कम हो गयी।

(२) सदियों से भारत में खेती का काम बैलों से किया जाता था परंतु अब कृषि-यंत्रों का उपयोग ज्यादा किया जा रहा है।

(३)चमड़े से विभिन्न उत्पाद बनानेवाली कम्पनियों को किसान लालच में आकर गाय-बैल बेच देते हैं।

गौ-रक्षा के सरल एवं असरकारक उपाय

(१) छोटे-छोटे गाँव, कस्बों में जहाँ एलपीजी या बिजली नहीं पहुँच पाती, उन भागों में गोबर गैस का उपयोग करें। दुकानों एवं मॉल्स आदि में मिलनेवाले देशी गौ-पदार्थ जैसे - दूध, दही, घी आदि में असली और नकली की पहचान कर असली का ही उपयोग करें। अनेक प्रकार की बीमारियों को ठीक करनेवाले गोझरण व गोबर से बने गोझरण अर्क, टेबलेट, धूपबत्ती आदि का उपयोग करें।

(२) गाय दूध देना बंद भी कर देती है तो भी यदि उसके गोबर और झरण (गोमूत्र) का भलीभाँति उपयोग किया जाय और समाज को उसके प्रति जागृत किया जाय तो गाय से बहुत लाभ उठाया जा सकता है।

(३) चर्बीयुक्त खाद्य पदार्थ एवं चमड़े से बने पर्स, चप्पल, जूता, बेल्ट आदि का उपयोग न करें। शास्त्रों के अनुसार ऐसी वस्तुएँ निषिद्ध मानी गयी हैं।

(४) देश की सरकार गौ-हत्या पर कानूनन प्रतिबंध लगाये एवं गौ-रक्षा हेतु विशेष प्रावधान बनाये।

(५) **किसानों में जागृति :** ✻ खेतों में फिर से अधिकाधिक बैलों से काम लें। ✻ रासायनिक खाद की जगह गोबर खाद का उपयोग करें। इससे उत्तम एवं स्वास्थ्यप्रद फसल प्राप्त होगी, साथ ही जमीन भी उपजाऊ बनी रहेगी। ✻ उत्तम गुणवत्ता के गौ-उत्पाद बाजार में उपलब्ध करायें। इससे उनकी माँग स्वाभाविक रूप से बढ़ेगी और किसान आर्थिक रूप से समृद्ध बनेंगे।

आज आधुनिकीकरण और कुछ स्वार्थपूर्ण कारणों से गायों की बहुउपयोगिता को नजरअंदाज कर उन्हें कत्लखानों को बेचा जा रहा है। परंतु पूज्य संत श्री आशारामजी बापू ने तो कत्लखाने ले जायी जा रही ५ हजार गायों को छुड़वाया और उनके लिए गौशाला खुलवायी। साथ ही उनकी नस्ल भी सुधारी व उनकी सेवा का बीड़ा उठाकर समाज को सुंदर प्रेरणा दी। देशभर में महाराजश्री की कई गौशालाएँ चल रही हैं। आप अपने करोड़ों भक्तों-अनुयायियों को गाय व उसके दूध, दही, घी, गोबर, झरण आदि की महत्ता समझाकर गौसेवा के लिए प्रेरित करते हैं। आश्रम की गौशालाओं में गाय के झरण व गोबर से बननेवाले उत्पादों से कई परिवारों के लिए रोजी-रोटी के द्वार खुल गये हैं।

गौमाता की महिमा बताते हुए पूज्य बापूजी कहते हैं : ''हम गाय का पोषण नहीं करते, गाय हमारा पोषण करती है। जब से हमने गाय का महत्त्व जाना और उसका लाभ उठाया है, तब से हम और भी स्वस्थ हो गये हैं।''

गाय हमारी भारतीय संस्कृति का महत्त्वपूर्ण अंग है। आज हर ओर से हमारी संस्कृति पर कुठाराघात किया जा रहा है। इसी षड्यंत्र का एक भाग है गौ-हत्या। गौ की महत्ता को देखते हुए हमारे भारत देश में तो गौ-हत्या के लिए कोई स्थान ही नहीं होना चाहिए परंतु बड़े अफसोस की बात है कि एशिया का सबसे बड़ा कत्लखाना हमारे भारत में ही है। आज अगर हमें अपनी संस्कृति को बचाना है तो हर भारतवासी को जागना होगा और उपरोक्त प्रकार से गौ-सेवा का यथासम्भव संकल्प लेना होगा।

मतदान जरूर करना चाहिए

- पूज्य बापूजी

आप नेता हैं तो अपने इलाके के लोगों का खयाल रखो और आप जनता हैं तो अच्छे नेता को वोट (मत) देने का खयाल करो। वोट का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए, वोट जरूर देना चाहिए। हमारा कोई भी साधक अपना वोट देने का काम नहीं छोड़े क्योंकि साधक वोट देगा तो अच्छे आदमी को पहचान के देगा। इसलिए हमारे कोई भी मंत्रदीक्षित साधक हैं तो वे खुद तो वोट दें और अपने परिचित से भी वोट दिलवायें ताकि अच्छे लोगों की पसंदगी का कोई अच्छा आदमी आये।

हालाँकि कई लोग कहते हैं, नेता का चुनाव करना आसान नहीं है लेकिन फिर भी अन्य नेताओं की अपेक्षा जो सत्संगी है, उसमें कुछ सद्गुण है तब तो सत्संग में आता है। कुछ तो अच्छाई है, भले ही १०० प्रतिशत सोना नहीं है तो ९० प्रतिशत से भी गहना बन जायेगा। बाकी तो चुनाव में कई लोग एक-दूसरे पर आरोप लगाते रहते हैं लेकिन सत्संगी नेता होता है तो जरा ठीक रहता है। अच्छे लोग आगे आयें।

अच्छे आदमी को अपना कर्तव्य निभाने में उसकी अच्छाई साथ देती है। बुरा आदमी अपना कर्तव्य निभायेगा तो बुरी आदतों के कारण बुराई की तरफ का कर्तव्य निभायेगा। इसलिए संसार का संतुलन रखना है तो भगवान और देवता भी अच्छे लोगों को मदद करते हैं।

मति का कमाल, ईर्ष्यालुओं का बुरा हाल

एक दिन अकबर के दरबार में बीरबल से ईर्ष्या करनेवाले कुछ दरबारी व मंत्री बीरबल के विरुद्ध नारे लगा रहे थे। अकबर भी उनके झाँसे में आ गया और बीरबल को तुरंत सूली पर चढ़ाने का हुक्म दे दिया।

सूली देखकर बीरबल तनिक भी न घबराया। दृढ़ श्रद्धापूर्वक मंत्रजप करनेवाला बीरबल प्रत्युत्पन्न मति (त्वरित सही निर्णय लेने में सक्षम विचक्षण मति) से सम्पन्न हो चुका था। उसने बादशाह से आखिरी बार बात करने की इच्छा जतायी। बुलाये जाने पर बोला : ''जहाँपनाह ! मैंने बाकी सारी चीजें तो आपको बता दीं पर मोती उगाने की कला आपको सिखा न सका।''

सुनते ही अकबर के मुँह में पानी आ गया : ''सुभान अल्लाह ! बीरबल ! तुम तो पाक रूह हो। यह नेक काम किये बगैर मैं तुम्हें कैसे विदाई दे सकता हूँ!''

बीरबल मन-ही-मन हँसा कि 'वाह रे लोभी, धोखेबाज संसार ! तेरी नीयत कब, कैसे रूप धारण कर ले, कोई पता नहीं ! धन्य है गुरुज्ञान ! दुनिया भले वैरी बन जाय पर यह कभी साथ नहीं छोड़ता।'

बीरबल ने ईर्ष्यालुओं को सबक सिखाने के लिए जहाँपनाह से यह कहकर उनके मकान ढहवा दिये कि ''इस भूमि पर उत्तम मोती पैदा हो सकते हैं।'' फिर बीरबल ने वहाँ जौ बोवा दिये। कुछ दिनों बाद पौधे उगने पर उसने कहा : ''कल प्रातः ये पौधे मोती उत्पन्न करेंगे और कल ही इन्हें काटा जायेगा।''

लोग यह नजारा देखने के लिए एकत्र हुए। प्रातःकाल ओस की बूँदें जौ के पौधों व पत्तों पर मोती की तरह चमक रही थीं। बीरबल ने कहा : ''अब आप लोगों में से जो सर्वथा निरपराधी हो, वह इन मोतियों को काट ले। पर सावधान ! यदि किसीने कभी एक भी अपराध किया होगा तो ये मोती पानी होकर गिर पड़ेंगे।''

बीरबल की नजर अब मंत्रियों की ओर मुड़ गयी। वह बोला : ''मंत्रिवर ! आप लोग अत्यंत ईमानदार, प्रजाहितैषी, बादशाह के निकटवर्ती हैं। आपके पावन चरित्र के प्रभाव से बादशाह का खजाना आज मोतियों से भरनेवाला है। भाइयो ! मैं आपको आमंत्रित करता हूँ।''

यह सुनते ही मंत्रियों के माथे पर चिंता-भय की लकीरें छाने लगीं। खुद के काले कारनामों की स्मृति उनके हृदयपटल पर उभर आयी। किसीकी भी आगे बढ़ने की हिम्मत न हुई।

तब बीरबल ने अकबर से कहा : ''जहाँपनाह ! आप तो परम न्यायप्रिय, कर्तव्यनिष्ठ, प्रजावत्सल, सबसे नेक इन्सान हैं। मेरी आपसे दरख्वास्त है कि अपने कदम आगे बढ़ायें।''

प्रजाजनों की नजरें अकबर पर केन्द्रित हो गयीं। अकबर की गर्दन शर्म से झुक गयी, नजरें धरती में गड़ गयीं।

अकबर को एहसास हुआ कि 'बीरबल को दोषी कहनेवाले दरबारी, मंत्री तथा (शेष पृष्ठ १७ पर)

अब बोला आधुनिक विज्ञान, हर गर्भ में है प्रह्लाद जैसी संतान

हमारे ऋषि-मुनियों ने खोज करके अनादिकाल से यह बताया हुआ है कि बच्चे को गर्भावस्था में जिस प्रकार के संस्कार मिलते हैं, आगे चलकर वह वैसा ही बन जाता है। जैसे राक्षस हिरण्यकशिपु की पत्नी कयाधु को सगर्भावस्था के दौरान देवर्षि नारदजी के सत्संग से भक्ति के संस्कार मिले तो गर्भस्थ बालक आगे चलकर महान भगवद्भक्त, ज्ञानी व कुशल शासक प्रह्लाद हुआ। इसी प्रकार अभिमन्यु ने माँ के गर्भ में ही चक्रव्यूह भेदने का ज्ञान पा लिया था।

इस युग में ये बातें लोगों के लिए आश्चर्यजनक थीं लेकिन अब वैज्ञानिकों ने शोधों के द्वारा इस बात को स्वीकार कर लिया है कि बच्चा गर्भावस्था से ही सीखने की शुरुआत कर देता है, खासकर उसे शब्दों का ज्ञान हो जाता है। कुछ शिशुओं पर जन्म के बाद परीक्षण किये गये व उनके मस्तिष्क की क्रिया जाँची गयी तो पाया गया कि शिशु के मस्तिष्क ने गर्भावस्था के दौरान सुने हुए शब्दों को पहचानने के तंत्रकीय संकेत दिये।

शोध के मुताबिक गर्भावस्था के दौरान ७वें माह से गर्भस्थ शिशु शब्दों की पहचान कर सकता है और उन्हें याद रख सकता है। इतना ही नहीं, वह मातृभाषा के स्वरों को भी याद रख सकता है। हेलसिंकी विश्वविद्यालय (फिनलैंड) के न्यूरोसाइंटिस्ट आयनो पार्टानेन व उनके साथियों ने पाया कि 'गर्भावस्था में सुनी गयी लोरी को जन्म के चार महीने बाद भी बच्चा पहचानता है या याद रखता है।'

गर्भस्थ बालक पर माँ के खान-पान, क्रियाकलाप, मनोभावों आदि (शेष पृष्ठ २० पर)

(पृष्ठ १६ का शेष) स्वयं हम भी कितने दोषी व अपराधी हैं ! बीरबल निर्दोष है, उसे ईर्ष्यालुओं ने फँसाया है।' अकबर ने बीरबल की प्रत्युत्पन्न मति की सराहना करते हुए उसे बाइज्जत बरी किया व मंत्रिपद सँभालने के लिए मना लिया।

जहाँ सारे संबंध मुँह मोड़ लेते हैं वहाँ गुरुकृपा ही शिष्य की पल-पल रक्षा करती है, उसे मार्गदर्शन व दिव्य प्रेरणा देकर संकटों से उबार लेती है।

भोलानंद ने किया षड्यंत्रकारियों व भ्रष्ट मीडियावालों को बेनकाब

विनोद गुप्ता उर्फ भोलानंद ने हजारों लोगों के सामने आकर षड्यंत्र का पर्दाफाश करते हुए कहा :

मैं आपको सच्चाई बताने के लिए आया हूँ। मेरी आत्मा अंदर से लानत बरसा रही थी कि मैं कब तक छुपाऊँगा। मैंने कहा, मैं अपनी गलती स्वीकार करूँगा जाकर के। इसमें मुझ पर किसीका कोई दबाव नहीं है।

संस्कृति को नष्ट करने के लिए जो ताकतें लगी हैं, मेरी अब समझ में आया है कि उन लोगों ने मेरे से क्या करवा दिया ! २०१० में मैं आश्रम से निकल गया था, २०१२ में मैंने विरार, मुंबई में अपना योगा सेंटर शुरू किया । जून-जुलाई २०१३ की बात है। उस समय वहाँ महेन्द्र चावला और वीणा नाम की एक औरत - दोनों मुझसे मिले । बापूजी के खिलाफ इन्होंने काफी सारी बातें कहीं, बोले : ''भोला ! अब तुम मुंबई आ गये हो, हम तुमको चमका देंगे।'' ५-६ दिन के बाद महेन्द्र चावला का फोन आया कि ''देखो, अभी हम ऐसा गेम खेलने जा रहे हैं कि हम सभी मालामाल होंगे और बापू कितना भी जोर लगा लें पर जेल से बाहर कभी नहीं आ पायेंगे।'' फिर इन्होंने मेरा दिमाग वॉश करना शुरू किया।

जब बापूजी जेल में गये, उसके ४-५ दिन बाद ये लोग मेरे पीछे हाथ धो के पड़ गये। उन्होंने एक प्रसिद्ध ज्योतिषी से मिलवाया । मुंबई के अंदर उनका काफी नाम है, उन्होंने मेरा हाथ देखकर कहा : ''तुम्हारे तो सितारे चमकनेवाले हैं, तुम ५-७ दिनों में ५-६ करोड़ के मालिक बननेवाले हो।''

मैंने कहा : ''५-६ करोड़ तो क्या, मैंने कभी ५-१० लाख भी नहीं देखे।''

''आपको पता नहीं है कि मुंबई में रातों-रात लोग अरबोंपति बन जाते हैं।''

''ठीक है, बताओ ऐसी क्या युक्ति है ?''

तुरंत ही फिर इंडिया टीवीवाला वसीम अख्तर मेरे पास आया। उसने पहले से ही एक मैटर तैयार कर रखा था कि मुझे क्या-क्या बोलना है। उसके बाद अमृत प्रजापति, महेन्द्र चावला, विरार-मुंबई की वीणा, राजू चांडक और भी कई लोग थे जिनके मेरे पास फोन आते थे। इनमें मुख्य था देवेन्द्र जो आजकल दिल्ली में है। देवेन्द्र जो लाइन देता था न, उससे महसूस होता था कि कोई लाइन से बात करवाता है । अपने फोन पर 'चालू रखो' ऐसा बोलता था फिर वाया-वाया करके लाइन जाती थी

। चांडाल-चौकड़ी तो ये हैं ही, और भी कई इसमें सम्मिलित हैं। कई तो मीडिया में शामिल हैं। दीपक चौरसिया ने तो ऐसा खेल रच रखा था, वह फोन पर खुद बात नहीं करता था, मुंबई में 'इंडिया न्यूज' का मुख्य मनीष अवस्थी बैठता है, वह रोज गाड़ी लेकर मेरे को लेने आता। कुछ गाड़ियाँ और आगे-पीछे चलती थीं, एक 'इंडिया टीवी' वाले वसीम अख्तर की, 'न्यूज-२४' वाले की और 'एबीपी न्यूज' वाले की। ये लोग जब मुझे बुलवाते तो पहले रुपयों की नोटें दिखाते। मैंने जिंदगी में इतनी नोटें नहीं देखी होंगी जितनी मीडियावाले मुझे दिखाते थे ! वे सूटकेस भर-भर के गाड़ी के अंदर ही बैठे होते थे। उसी गाड़ी में इनके २-३ गुंडे भी बैठे होते थे। फिर इन्होंने मुझे मीरा रोड (मुंबई) में ७०-८० लाख का फ्लैट दिखाया। जब भी कुछ मना करूँ तो मेरे को प्रलोभन दे देंवे, साथ में डराने-धमकाने के लिए गुंडे बैठा रखे थे।

ये जहाँ से लाइव करते हैं वहाँ इन्होंने मुझे अपने पास दो दिन रखा। इन्होंने बहुत सारे मैटर तैयार कर रखे थे, जैसे - 'बापूजी ने १५-१६ लड़कियों के साथ बलात्कार किया और लड़की मार के दबाई हुई है...' आदि। ताकि बापूजी को अधिक-से-अधिक फँसा सकें और वे निकल ही न सकें। मैंने कहा : ''यह नहीं बोलूँगा'' तो फिर उन्होंने प्रेशर देना शुरू किया।

जो डिबेट होती थी उसमें भी ऐसा ही होता था कि सामनेवाले का चेहरा नहीं दिखता है, वहाँ छोटे-से कमरे में कैमरा होता है, इनके २-४ गुंडे होते हैं। मैं जब बोलता उस समय फोन आते थे, एक तो दीपक चौरसिया तथा देवेंद्र आदि के और जो आश्रम से निकले गद्दार लोग हैं उनके। वहाँ हर ५ मिनट का जो ब्रेक होता है, उसमें मैसेज छोड़ते थे और एंकर मुझे बताती कि मुझको क्या बोलना है। ऐसे ही अमृत प्रजापति बताता था। और कुछ मैं भूल जाता तो ये लोग मेरे मोबाइल पर मैसेज छोड़ते थे। मैंने उसकी पूरी कॉल डिटेल न्यायालय में दे दी है। उसके बाद ये वैसा करवाते रहे मेरे से। इनके लोग वीणा से, महेन्द्र चावला से फोन पर बात करते थे : ''देखो, अधिकतर काम हो चुका है, पैसे तुम्हारे पास आनेवाले हैं।''

मेरे को भूख लगती तो ये आइसक्रीम खिलाते। जो रुपयों की थप्पियाँ ले रखी थीं, उन्हीमें से नोट निकालते। मेरा दिमाग खराब होता कि 'मेरे को पैसा नहीं दे रहे और ५००-५०० की आइसक्रीम खिला रहे व खुद भी खा रहे हैं !' न तो फ्लैट दिया, न पैसे दिये और मेरे को ऐसी जगह धकेल दिया कि आज किसी लायक नहीं रहा हूँ।

टीवी सच नहीं दिखाती है। टीवी पर तो ५०० रुपये का माल ५ हजार रुपये में बिकता है। चैनलवाले लोगों को काम में लेते हैं और फेंक देते हैं तथा हमारी संस्कृति को नष्ट करने में लगे हैं। वीणा का तो शुरू से रहा है, जब मेरे से मिलती तो बोलती कि ''नारायण साँईं के आश्रम की जमीन में मैं बहुत सारे फ्लैट बनाऊँगी और गुप्ताजी ! आपको भी ५-७ फ्लैट दे देंगे।'' जयप्रकाश जो 'इंडिया टीवी' का है, उसने मेरे योगा सेंटर पर जो माताएँ-बहनें योग सीखने आती थीं, उनसे बोला कि ''मुँह पर कपड़ा बाँध के अगर आप बोलोगी न, तो जो पैसा माँगोगी हम देंगे, आपको जो बोलना है हम उसका मैटर तैयार करके देंगे।'' जो समझदार बहनें, बच्चियाँ, माताएँ थीं उन्होंने कहा : ''हम क्यों बोलें ?''

फिर उसने मेरे पर दबाव दिया कि ''कोई पैसे ले-देकर बोल देवे, ऐसे किसीको ला दो।'' अब पता चला कि यह तो कई करोड़ों की गेम खेली गयी है। उसके बाद महेन्द्र चावला, अमृत प्रजापति तथा वीणा, और भी महिलाएँ थीं, उन सबका फोन आया कि ''गुप्ताजी ! आपने बहुत अच्छा काम कर दिया। बस, अब आप सिर्फ जोधपुर में आकर सरकारी गवाह बन जाइये।''

मैंने कहा : ''वह क्या होता है ?''

बोले : ''कुछ नहीं, आपको पुलिस प्रोटेक्शन मिलेगी, ५-६ पुलिसवाले सदा साथ रहेंगे।''

इसके पहले अमृत वैद्य ने मेरे को दवाई भेजी थी। बापूजी के जेल जाने के ७-८ दिन पहले राजू चांडक और महेन्द्र चावला के भेजे हुए लोग दवा लेकर आये थे। दवा लेने से जैसा वे बुलवा रहे थे, वैसा मैं बोल रहा था।

***

प्रश्न : यदि आपके ऊपर कोई आक्रमण हो या कोई आपको क्षति पहुँचाये तो आपका शक किस पर जा सकता है ?

भोलानंद : इन षड्यंत्रकारी लोगों का यह कहना था कि ''गुप्ताजी ! देखो, आप फँसते हो या हममें से कोई भी अगर पकड़ा गया तो हम एक-दूसरे को गोली मार देंगे या चाकू से वार कर देंगे, ऐसा कुछ कर लेना अथवा हम करवा देंगे। फिर हम लोग केस बना के बापू पर डाल देंगे।'' ऐसी इनकी पूरी प्लानिंग थी। परंतु ये भले कितना भी कुछ कर लें लेकिन बापूजी बिल्कुल निष्कलंक बाहर आयेंगे। बापूजी बिल्कुल निर्दोष हैं ! निर्दोष हैं !! निर्दोष हैं !!!

अमृत बिंदु

*** एक गुण दूसरे गुण को ले आता है ऐसे ही एक अवगुण दूसरे अवगुण को ले आता है, अतः सजग रहें।**

*** जिसके जीवन में समय का मूल्य नहीं, कोई ऊँचा लक्ष्य नहीं वह बिना पतवार की नाव जैसा होता है। साधक एक-एक श्वास की कीमत समझता है।** **- पूज्य बापूजी**

(पृष्ठ १७ का शेष) का भी प्रभाव पड़ता है और माँ द्वारा की गयी हर क्रिया से बच्चा सीखता है। परंतु उसके सीखने की सीमा को विज्ञान अभी पता लगाने में सक्षम नहीं हो पाया है।

गर्भ में ही बना दें बच्चों को सुसंस्कारी

वैज्ञानिक भले इस बात को अभी मान रहे हैं परंतु पूज्य बापूजी अपने सत्संगों में पिछले लगभग ५० वर्षों से यह बात बताते आये हैं। बापूजी का ब्रह्मसंकल्प है कि ये ही संस्कारी बालक आगे चलकर भारत को विश्वगुरु के पद पर पहुँचायेंगे।

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''वर्तमान युग में कई माता-पिता ऐसा सोचते हैं कि हमें ऐसे पुत्र क्यों हुए ? उन्हें यह बात समझ लेनी चाहिए कि आजकल स्त्री अथवा पुरुष गर्भाधान के लिए उचित-अनुचित समय-तिथि का ध्यान नहीं रखते हैं। परिणाम में समाज में आसुरी प्रजा बढ़ रही है। बाद में माता-पिता फरियाद करते रहते हैं कि हमारे पुत्र हमारी आज्ञा में नहीं चलते हैं, उनका चाल-चलन ठीक नहीं है इत्यादि। परंतु यदि माता-पिता शास्त्र की आज्ञानुसार रहें तो उनके यहाँ दैवी और संस्कारी संतानें उत्पन्न होंगी, श्रीराम और श्रीकृष्ण के समान बालक जन्म लेंगे।''

जो महिलाएँ सगर्भावस्था में टीवी सीरियल व फिल्में देखती हैं, अश्लील गाने आदि सुनती रहती हैं उनके शिशुओं में वे संस्कार गर्भ में ही गहरे पड़ जाते हैं, जिससे बड़े होकर उनका स्वभाव चंचल, कामुक व आपराधिक होने की सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं।

गर्भावस्था के दौरान सत्संग, सत्शास्त्रों का अध्ययन, देव-दर्शन, संत-दर्शन, भगवद्-उपासना करें और मन को सद्विचारों से ओतप्रोत रखें। भगवन्नाम का अधिकाधिक मानसिक जप करें। इससे आपकी संतान दैवी सद्गुणों से युक्त होगी।

बापूजी बताते हैं, क्या हम करते हैं ?

करें दिनचर्या का निरीक्षण, बनायें सफल जीवन का हर क्षण

सबका मंगल, सबका भला' की भावना से ओत-प्रोत पूज्य बापूजी आत्ममस्ती के सागर की गहराइयों में डुबकी लगा के ऐसा खजाना खोज लाते हैं जिससे सभीका जीवन खुशहाल हो जाय। पूज्य बापूजी लौकिक व आध्यात्मिक उन्नति की युक्तियाँ एवं साधना में शीघ्र उन्नतिकारक नित्य नवीन प्रयोग सिखाकर साधकों के सर्वांगीण विकास का राजमार्ग प्रशस्त कर देते हैं। पूज्यश्री वे ही प्रयोग बताते हैं जो हम सरलता से कर सकें। लाखों-करोड़ों लोगों का यह अनुभव है कि बापूजी के बताये मार्ग पर हम जितनी तत्परता से चलते हैं, उतना ही हमारा जीवन अधिक उन्नत होता है।

जीवन के सर्वांगीण विकास व ईश्वरप्राप्ति हेतु बापूजी द्वारा प्रदत्त साधना-सेवा के पथ पर हम कितनी तत्परता से अग्रसर हो रहे हैं, इसका मूल्यांकन करने के लिए नीचे दी गयी सारणी वरदानस्वरूप सिद्ध होगी। इसे घर में पूजा के स्थान अथवा जहाँ आपकी बार-बार नजर पड़े ऐसे स्थान पर लगा दें और नियमित रूप से इसमें दिये गये रिक्त खानों में हाँ (a) या ना (r) का निशान लगायें।

टिप्पणी : हर महीने के लिए इसकी दो प्रतिलिपियाँ निकलवायें।

उन्नति की अनमोल कुंजियाँ															
(१) ब्राह्ममुहूर्त में जागरण, करदर्शन आदि															
(२) नींद से उठकर शांत बैठना, श्वासोच्छ्वास की गिनती															
(३) शशकासन (मत्था टेक प्रयोग) ३ से ५ मिनट															
(४) सूर्योदय से पूर्व स्नान															
(५) टंक विद्या – २ बार															
(६) 'ॐ' का चमत्कारिक प्रयोग ('तेजस्वी बनो' पुस्तक, आवरण पृष्ठ ३)															
(७) प्राणायाम, योगासन, सूर्यस्नान, स्थलबस्ति प्रयोग															
(८) गुरुमंत्र के जप की निश्चित मालाएँ															
(९) प्रार्थना ('हे प्रभु ! आनंददाता...' का पाठ)															
(१०) किसीकी निंदा न करने, न सुनने का व्रत															
(११) सूर्य-अर्घ्य (व यथासम्भव तुलसी, पीपल को जल)															
(१२) सुबह खाली पेट तुलसी के ५-७ पत्ते खाना (रविवार को नहीं)															
(१३) त्राटक – १५ से ३० मिनट															
(१४) त्रिकाल संध्या															
(१५) देव-मानव हास्य प्रयोग															
(१६) सेवा (रोज कुछ घंटे अथवा सप्ताह में निश्चित दिन)															
(१७) भोजन के पूर्व मंत्रोच्चारण/गीता के १५वें अध्याय का पाठ															
(१८) कार्य के बीच-बीच में शांत होना															
(१९) सत्संग श्रवण-मनन, सत्साहित्य एवं शास्त्र अध्ययन															
(२०) रात्रि-शयन के पहले 'ॐ' का जप व श्वासोच्छ्वास की गिनती															
(२१) एकादशी का उपवास (निराहार/फलाहार/दुग्धाहार)	कृष्ण पक्ष								शुक्ल पक्ष						

आप इस सारणी में अपने समय व सामर्थ्यानुसार और भी नियम जोड़ सकते हैं ।

उत्तम स्वास्थ्य के लिए महत्त्वपूर्ण बातें

✻ प्रतिदिन बच्चों को प्यार से जगायें व उन्हें बासी मुँह पानी पीने की आदत डालें।

✻ चाय की जगह ताजा दूध उबालें व गुनगुना होने पर बच्चों को दें। दूध से प्राप्त प्रोटीन्स व कैल्शियम शारीरिक विकास के लिए अति महत्त्वपूर्ण होते हैं।

✻ सुबह नाश्ते में तले हुए पदार्थों की जगह उबले चने, अंकुरित मूँग, मोठ व चने की चाट बनायें। इसमें हरा धनिया, खोपरा, टमाटर, हलका-सा नमक व जीरा डालें। ऊपर से नींबू निचोड़कर बच्चों को दें। यह 'विटामिन ई' से भरपूर है, जो चेहरे की चमक बढ़ाकर ऊर्जावान बनायेगा।

✻ सब्जियों का उपयोग करने से पहले उन्हें २-३ बार पानी से धो लें। छीलते समय पतला छिलका ही उतारें क्योंकि छिलके व गूदे के बीच की पतली परत 'विटामिन बी' से भरपूर होती है।

✻ सब्जियों को जरूरत से अधिक देर तक न पकायें, नहीं तो उनके पोषक तत्त्व नष्ट हो जायेंगे। पत्तेदार हरी सब्जियों से मिलनेवाले लौह (आयरन) तथा खनिज लवणों (मिनरल सॉल्ट्स) की कमी को कैप्सूल व दवाइयों के रूप में पूर्ति करने से बेहतर है कि इनको अपने भोजन में शामिल करें।

✻ सप्ताह में १-२ दिन पत्तेदार हरी सब्जियाँ जैसे पालक, मेथी, मूली के पत्ते, चौलाई आदि का साग जरूर खायें। इन सब्जियों को छिलकेवाली दालों के साथ भी बना सकते हैं क्योंकि दालें प्रोटीन का एक बड़ा स्रोत हैं।

✻ चावल बनाते समय माँड न निकालें।

✻ चोकरयुक्त रोटी साधारण रोटी की तुलना में अधिक ऊर्जावान होती है। आटा हमेशा बड़े छेदवाली छन्नी से ही छानें।

✻ दाल व सब्जी में मिठास लानी हो तो शक्कर की जगह गुड़ डालें क्योंकि गुड़ में ग्लुकोज, लौह-तत्त्व, कैल्शियम व केरोटिन होता है। यह खून की मात्रा बढ़ाने के साथ-साथ हड्डियों को भी मजबूत बनाता है। (शेष पृष्ठ २५ पर)

गजब है ईश्वरीय व्यवस्था !

- पूज्य बापूजी

एक बार नर्मदा किनारे एक संत मिले, हमने उनसे पूछा : ''आप बाबाजी कैसे बने ? संन्यासी कैसे बने ?''

संत बोले : ''मैं अहीर का लड़का था। गाय-भैंसें चराता था। सोचा कि 'निगुरे होकर क्या रहना, कोई गुरु कर लूँ।'

मैं गुरु के पास गया तो उन्होंने कहा : ''चल रे ग्वाले ! तू क्या मंत्र जपेगा ! तू क्या साधना करेगा आत्मज्ञान की ! मैं तो केवल ब्राह्मण को ही दीक्षा देता हूँ।''

''बाबाजी ! मैं ब्राह्मण का बेटा तो नहीं हूँ लेकिन दया करो।''

''दया करूँगा लेकिन पहले तू गीता का एक श्लोक पक्का (याद) करके दिखा। मैं भी तो देखूँ कि तू भक्ति कर सकता है या नहीं।''

मैंने गीता का श्लोक पक्का किया तो वे बोले : ''पूरा अध्याय पक्का कर।''

मैं पूरा अध्याय पक्का करके गया तो बोले : ''सारे अध्याय पक्के कर।''

मैंने सभी अध्याय कंठस्थ किये, फिर भी उन महाराज का मन माना नहीं। मुझे कहा : ''हमारा विचार नहीं हो रहा है तुम्हें दीक्षा देने का।''

मैं तो जंगल में जाकर बहुत रोया कि 'क्या मैं इतना अभागा हूँ कि निगुरा पैदा हुआ और निगुरा ही मर जाऊँगा ? हे भगवान ! मौत आकर मार दे उससे पहले गुरु के ज्ञान से मेरा अहं मर जाय। मेरे और परमात्मा के बीच जो पर्दा है वह हट जाय ऐसी कृपा करनेवाले कोई सद्गुरु मुझे नहीं मिले, मैं कितना अभागा हूँ !गुरु ने कहा कि 'गीता कंठस्थ करके आ।' तो मैं गीता कंठस्थ करके गया फिर भी गुरु के मन में मुझे दीक्षा देने का विचार नहीं आया...'

रोते-रोते मैं बेहोश जैसा हो गया। निद्रा-तंद्रा आ

गयी, मुझे पता ही न चला। फिर जब मैं उठा तो देखा कि आकाश में पद्मासन बाँधे हुए एक दंडी संन्यासी जा रहे थे। मैं तो उन्हें देखता ही रहा। बड़ी शांति मिली, बहुत आनंद आया। मन में हुआ, 'हे भगवान ! तेरी लीला अपरम्पार है !'

वे तो अलोप हो गये। दूसरे दिन मैं नाश्ता करके घर से बाहर निकला। गायें आगे थीं और मैं पीछे। तब अचानक वे ही संन्यासी मेरे सामने आये और बोले : ''तुझे गुरु करने हैं न ? चल, मैं तेरा गुरु हूँ।'' मुझे जंगल में ले गये। फिर मंत्रदीक्षा देकर अदृश्य हो गये। अब मैं नर्मदा किनारे गुरुमंत्र का अनुष्ठान करता हूँ, साधना करता हूँ।''

गजब की है ईश्वरीय सृष्टि की व्यवस्था ! साधक की ईश्वरप्राप्ति की तीव्र उत्कंठा होती है तो अदृश्य रूप में भी उसे सद्गुरु के द्वारा मंत्रदीक्षा मिल जाती है। (सचमुच वे लोग तो महाधनभागी हैं जिनको सद्गुरुरूप में कोई जागृत महापुरुष, कोई अहैतुकी करुणावान ब्रह्मज्ञानी संत मिल गये हैं, जिनको ऐसे महापुरुषों से सहज में ही भगवन्नाम की दीक्षा मिल गयी है।)

(पृष्ठ २३ का शेष) ✻ जहाँ तक सम्भव हो सभी खट्टे फल कच्चे ही खायें व खिलायें क्योंकि आँवले को छोड़कर सभी खट्टे फलों व सब्जियों का 'विटामिन सी' गर्म करने पर नष्ट हो जाता है।

✻ भोजन के साथ सलाद के रूप में ककड़ी, टमाटर, गाजर, मूली, पालक, चुकंदर, पत्ता गोभी आदि खाने की आदत डालें। ये आँतों की गति को नियमित रखकर रोगों की जड़ कब्जियत से बचायेंगे।

✻ दिनभर में डेढ़ से दो लीटर पानी पियें।

✻ बच्चों को चॉकलेट, बिस्कुट की जगह गुड़, मूँगफली तथा तिल की चिक्की बनाकर दें। गुड़ की मीठी व नमकीन पूरी बनाकर भी दे सकते हैं।

✻ जहाँ तक हो सके परिवार के सदस्य एक साथ बैठकर भोजन करें। कम-से-कम शाम को तो सभी एक साथ बैठकर भोजन कर ही सकते हैं। साथ में भोजन करने से पूरे परिवार में आपसी प्रेम व सौहार्द की वृद्धि तथा समय की बचत होती है।

उपरोक्त बातें भले ही सामान्य और छोटी-छोटी हैं लेकिन इन्हें अपनायें, ये बड़े काम की हैं।

बिना ऑपरेशन के ट्यूमर गायब !

जनवरी २००८ की बात है। मेरे पेट में भयंकर दर्द होने लगा। एक-दो नहीं, ७-७ डॉक्टरों को दिखाया, कई बार सोनोग्राफी करवायी। सभीने बच्चेदानी में ट्यूमर बताया। बहुत इलाज कराया पर कोई फायदा नहीं हुआ।

जून २००९ में पूज्य बापूजी वाराणसी में सत्संग हेतु पधारे। तब मुझे सत्संग व मंत्रदीक्षा का सौभाग्य मिला। मैंने पूज्य गुरुदेव के सामने करुणभाव से प्रार्थना की कि 'हे गुरुदेव ! अब आप ही मुझे इस भयंकर पीड़ा से निजात दिलाइये।' घर आकर मैंने संकल्प लिया और रोग-निवारण के लिए गुरुमंत्र का जप करना शुरू कर दिया। सारी दवाएँ बंद कर दीं। गुरुदेव की ऐसी कृपा हुई कि मात्र २ महीने में ही ट्यूमर ठीक हो गया। आज मैं बापूजी की कृपा से पूर्ण स्वस्थ हूँ।

ऐसे परमात्मस्वरूप अंतर्यामी गुरुदेव के श्रीचरणों में शत-शत नमन !

- पूनम दीक्षित, वाराणसी (उ.प्र.)

प्रीति का पथ

– स्वामी श्री अखंडानंदजी सरस्वती

सब ईश्वर की संतान हैं, सब ईश्वर के आत्मा हैं, फिर भी जगत की व्यवस्था चलाने के लिए कोई मर्यादा रखनी पड़ती है। वह मर्यादा क्या है ? जो ईश्वर के सम्मुख होता है, ईश्वर से अपनी रक्षा चाहता है ईश्वर उसकी रक्षा करता है। जो ईश्वर से विमुख होता है, ईश्वर को नहीं मानता है, ईश्वर से प्रार्थना नहीं करता है वह है तो ईश्वर का ही परंतु ईश्वर के अनुग्रह को ग्रहण करने की योग्यता उसके अंतःकरण में नहीं। ईश्वर के कृपा-प्रसाद को, आत्मीयता को, ज्ञान को, प्यार को, अनुग्रह को ग्रहण करने के लिए उनके सम्मुख होना पड़ता है - **सामुख्यवैमुख्याभ्याम् व्यवस्था।** ईश्वर के सम्मुख होने के लिए आत्मनिवेदन करना पड़ता है। अपने अंदर जो दोष हैं, दीनता है, हीनता है, मलिनता है वह निष्कपट होकर ईश्वर से बोलकर निवेदन करनी पड़ती है। यह नहीं कि वह अंतर्यामी है, सबकी जानता है तो कहने की क्या आवश्यकता है ?

बिना सद्गुण-चिंतन के अंतःकरण सद्भाव-सम्पन्न नहीं हो सकता। इसलिए परमार्थ के पथिक को सावधान रहकर अपने को सद्भाव एवं सद्गुणों से अलंकृत करना चाहिए। उसको देखकर भगवान प्रसन्न होते हैं और दूसरे लोगों के मन में भी भगवान के सम्मुख होने की भावना उत्पन्न होती है। इससे भगवान के भक्त बढ़ते हैं और भगवान का सुयश फैलता है।

पूज्य बापूजी की प्रेरणा से विश्व के करोड़ों लोगों ने मनाया 'मातृ-पितृ पूजन दिवस', बेअसर रहा दुष्प्रचार !

नवसारी (गुज.)

हिम्मतनगर (गुज.)

फालना (राज.)

बाड़मेर (राज.)

दौंड, जि. पुणे (महा.)

ढोराला, जि. उस्मानाबाद (महा.)

गोंदिया (महा.)

अकोला (महा.)

झाँसी (उ.प्र.)

इलाहाबाद (उ.प्र.)

तेलीबाग-लखनऊ (उ.प्र.)

मुकेरियाँ (पंजाब)

पोलसारा, जि. गंजाम (ओड़िशा)

कटक (ओड़िशा)

नवरंगपुरा (ओड़िशा)

जयपोर (ओड़िशा)

निजामाबाद (आं.प्र.)

खंडवा (म.प्र.)

शाजापुर (म.प्र.)

हरिपुरधार, जि. सिरमौर (हि.प्र.)

राँची (झारखंड)

गिरिडीह (झारखंड)

मैसूर (कर्नाटक)

बीजापुर (कर्नाटक)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें।

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2012-14
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2014
LWPP No. CPMG/GJ/45/2012
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 30-06-2014)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

अहमदाबाद आश्रम

सोमनाथ ज्योतिर्लिंग (गुज.)

महाकालेश्वर, उज्जैन

केदारनाथ (उत्तराखंड)

ओंकारेश्वर (म.प्र.)

श्रीसैलम (आं.प्र.)

भीमाशंकर (पुणे)

दिल्ली

रुड़की, जि. हरिद्वार

भुवनेश्वर

नागपुर

मोड़ासा (गुज.)

महाशिवरात्रि पर्व पर देश के विभिन्न स्थानों पर हुए महायज्ञ, जागरण, जप तथा रुद्राभिषेक आदि कार्यक्रम। पूज्य बापूजी के उत्तम स्वास्थ्य और रिहाई के लिए प्रार्थना में डूबे साधक-भक्त।

देशभर में निकल रही हैं सुख-शांतिप्रद भगवन्नाम संकीर्तन यात्राएँ एवं प्रभातफेरियाँ, जिनमें लोगों को बापूजी की निर्दोषता से अवगत कराया जा रहा है।

पाली (राज.)

रायपुर (छ.ग.)

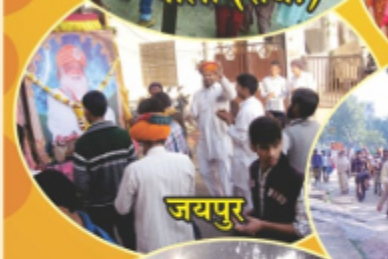
जयपुर

गाजियाबाद (उ.प्र.)

भोपाल

दिल्ली

बाड़मेर (राज.)

जोधपुर (राज.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें।